द्वितीय संस्करण

वनस्पति शब्दकोश

उपयोगी पौधों का हिन्दी–लैटिन–अंग्रेजी शब्दकोश

सुधांशु कुमार जैन
सुमिता श्रीवास्तव

SCIENTIFIC PUBLISHERS

ouLifr 'kCndks'k

¼mi;ksxh ikS/kksa dk fgUnh&ySfVu&vaxzsth 'kCndks'k½

f}rh; la'kksf/kr laLdj.k

Lq/kka'kq dqekj tSu] पी.एच.डी.

Lqfe=k JhokLro] एम.एस.सी.

साईन्टिफिक पब्लिशर्स

SCIENTIFIC PUBLISHERS

प्रकाशक

lkbfUVfQd ifCy'kl ¼bfM;k½

जोधपुर

5–ए, न्यू पाली रोड
पोस्ट बॉक्स नं. 91
जोधपुर – 342 001 भारत

दिल्ली

4806/24, अंसारी रोड़
दरियागंज,
नई दिल्ली – 110 002 भारत

© 2018, लेखकगण

iR;k[;ku – Limits of Liability and Disclaimer of Warranty

लेखक गण ने इस पुस्तक की शुद्धता के बारे में पूरा प्रयत्न एवं पूरी सावधानी रखी है, फिर भी लेखकगण इस पुस्तक के किसी तथ्य, भाग, विषय या अन्य कथ्य की प्रमाणिकता के बारे में कोई दावा नहीं करते हैं। लेखक गण इस पुस्तक के आधार पर की गई चिकित्सा के परिणाम का उत्तरदायी नहीं होगें । इस पुस्तक के आधार पर चिकित्सा करने से पूर्व आयुर्वेद के योग्य व अनुभवी विशेषज्ञ चिकित्सक का परामर्श अवश्य लेवें।

इस पुस्तक का कोई भी भाग लेखक या प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना माइक्रो फिल्म, फोटोस्टेट या अन्य किसी भी प्रकार से प्रकाशित नहीं किया जा सकता है।

ISBN: 978-93-86652-19-5
eISBN: 978-93-87869-96-7

Visit the Scientific Publishers (India) website at
http://www.scientificpub.com

Printed in India

SCIENTIFIC PUBLISHERS

ikDdFku

भारत की वनस्पति–सम्पदा, विविधता तथा उपयोगिता, दोनों ही दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। विविधता का विषय अवश्य अधिकांशतः विशेषज्ञों तथा वनस्पतिशास्त्र के विद्यार्थियों का अध्ययन क्षेत्र है, किन्तु उपयोगिता का विषय जन–मानस को भी आकर्षित करता है।

एक प्रामाणिक आंकलन के अनुसार भारत में पाए जाने वाले पेड़–पौधों में से लगभग एक–तिहाई से अधिक, किसी न किसी रूप में उपयोग में लाए जाते हैं। इनका उपयोग प्रमुख रूप से औषधि, भोज्य पदार्थ, मसाले, फल–सब्जी, रंग–सुगन्ध व प्रसाधन सामग्री की प्राप्ति, फर्नीचर तथा अन्य प्रकार के घरेलू सजावटी सामान व खिलौने आदि की लकड़ी तथा ईंधन हेतु किया जाता है। परिवेश की सुन्दरता हेतु, बाग–बगीचे, पार्क, मुख्य मार्गों के किनारे अथवा गमलों में लगाने के लिए, भारत में पाए जाने वाले अनेक प्रकार के शोभनीय पौधे उपयोग में लाए जाते हैं। भारत की सांस्कृतिक परम्परा में अनेक पौधों को पूज्य माना गया है, इनका उपयोग मांगलिक कार्यों तथा शोकाकुल परिस्थितियों, दोनों में आवश्यक समझा जाता है।

स्वाभाविक कुतूहलवश, आज का सामान्य नागरिक अपने आस–पास उगने वाले पेड़–पौधों के बारे में अनेक प्रकार की जानकारी प्राप्त करना चाहता है। मुख्य रूप से उसकी जिज्ञासा होती है कि अमुक पौधे का क्या नाम है, जब उसे ज्ञात होता है कि प्रत्येक पौधे का एक वैज्ञानिक नाम भी है, जिसके द्वारा वह समस्त जगत में जाना जाता है, तो वह उसका अन्तर्राष्ट्रीय नाम भी जानना चाहता है। यह नाम लैटिन भाषा में दिया जाता है जिसका सही उच्चारण भी जानना आवश्यक है। वह उसकी विशेष उपयोगिता भी पूछ लेता है।

अंग्रेजी भाषा में इस विषय से सम्बन्धित प्रश्नों के समाधान हेतु प्रचुर साहित्य उपलब्ध हैं, किन्तु हिन्दी में इस प्रकार की विषयवस्तु कम ही प्राप्य है।

SCIENTIFIC PUBLISHERS

डॉ. सुधांशु कुमार जैन, पूर्व निदेशक, 'बोटैनिकल सर्वे ऑफ इण्डिया' ने इस अभाव को समझते हुए, यह वनस्पति शब्द कोश उपलब्ध कराया है। निश्चय ही यह पुस्तक सामान्य जनों की इस प्रकार की क्षुधा पूर्ति हेतु सहायक सिद्ध होगी।

कोश की समस्त विषयवस्तु 'शब्दावली' के अन्तर्गत प्रस्तुत की गयी है। इसमें भारत में पाए जाने वाले प्रमुख रूप से उपयोगी लगभग 1500 पौधे सम्मिलित किये गए हैं। पौधों को देवनागरी लिपि के वर्णानुक्रम के अनुसार संयोजित किया गया है। प्रत्येक पौधे के साथ कहीं–कही उसके एक या एक से अधिक पर्यायवाची नाम दिए गए हैं। कहीं–कहीं उसका अंग्रेजी नाम भी दिया गया है। सूक्ष्म में उपयोगिता दर्शाई गई है। पौधे का वर्तमान में स्वीकृत लैटिन नाम देवनागरी लिपि व रोमन लिपि, दोनों में दिया गया है।

पुस्तक में उल्लिखित समस्त देवनागरी अथवा रोमन लिपि में आए नामों को क्रमशः परिशिष्ट–1 व परिशिष्ट–2 में वर्णानुक्रम के अनुसार सम्मिलित किया गया है। इनके द्वारा अनेक नामों में से कोई भी ज्ञात हो तो शब्दावली में उसे सरलता से खोजा जा सकता है।

पुस्तक का प्रथम संस्करण सन 2002 ई. में छपा था। कालान्तर में किन्हीं कारणवश कई लैटिन नाम अमान्य हो गए थे। नामों में परिवर्तन करते हुए आज के युग में जो नाम अस्वीकृत माने गए हैं उन्हें आवश्यकतानुसार बदल कर स्वीकृत नाम दिए गए हैं। उपयोगिता की दृष्टि से नई जानकारी के अनुसार कुछ अन्य पौधों को भी शब्दावली में समावेश किया गया है।

इस उपयोगी जानकारी को पुस्तक के रूप में उपलब्ध कराने के सराहनीय प्रयास के लिए लेखकगण बधाई के पात्र हैं।

';keyky dij
पूर्व विभागाध्यक्ष,
हरबेरियम तथा एन्ज्यास्पर्म टैक्सोनोमी,
नेशनल बोटेनिक्ल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, लखनऊ

SCIENTIFIC PUBLISHERS